षष्ठ अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों की भाषाशैली'

षष्ठ अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों की भाषाशैली'

प्रस्तावना : - उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों में से भाषा शैली का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा और शैली एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मूलत: भाषा पारस्पारिक विचार-विनिमय अथवा विचारों और भावों को प्रकट करने का साधन है। भाषा के अलावा हम किसी बात के बारे में विचार भी नहीं कर सकते। अपने मन में जो भी भाव जाग उठता है, उसे भी भाषा के आधार की आवश्यकता होती है। इसके बारे में डॉ. श्याम वर्मा लिखते है - "किसी भी लेखक का उद्देश्य यह होता है कि वह अपने अनुरूप भाव एवं विचार पाठक के मन में जागृत करें। इस प्रक्रिया का माध्यम है भाषा।"[1]

अत: कहना सही होगा कि रचनाप्रकार अपने भावों को तथा विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के माध्यम का ही प्रयोग करता है। मनुष्य शब्दों के माध्यम से ही विचारों को सरलता तथा स्पष्टता के साथ दूसरों के सामने अभिव्यक्त करता है। इन शब्दों को भाषा से वाणी मिलती है, तब उसमें एक शैली भी प्रयुक्त होती है।

भाषा और शैली का गहरा संबंध है। इसके बारे में शामसुंदर दास लिखते है - "भाषा ऐसे सार्थक शब्द समुहों का नाम है, जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरों के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होते हैं। अतएव भाषा का मूल आधार शब्द है, जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूल तत्व समझना चाहिए।"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि भाषा का मूल शब्द पर आधारित होता है और इसे उपयुक्त पद्धति से तथा रीति से प्रस्तुत करने के कौशल को ही शैली कहा जाता है।

6.1 भाषा :

भाषा भावाभिव्यक्ति का शक्तिशाली एवं सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा ही साहित्यकार अपने युग को प्रतिबिंबित करता है। जिसमें दो व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस कारण रचनाकार पाठकों से संबंध स्थापित कर भाषा को समृद्ध बनाने का प्रयास करता है। इसके बारे में डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त लिखते हैं - "भाषा उपन्यासकार के हाथों में एक शक्तिशाली

---

1. डॉ. शाम वर्मा - आधुनिक हिंदी गद्य शैली का विकास, पृ. 107.
2. शामसुंदर दास - साहित्यलोचन, पृ. 193.

उपकरण है। वह शब्द-योजना, वाक्य संरचना, वाक्य विन्यास और ध्वनि पैटर्न के प्रयोग द्वारा अपनी बात को विशेष प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करने में समर्थ होता है।''[1] अतः स्पष्ट होता है कि भाषा उपन्यासकार का शस्त्र है।

6.1.1 भाषा का स्वरूप एवं परिभाषा :- भाषा शब्द 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है व्यक्त वाणी। जिससे पूर्ण और स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। उसी को हम भाषा (व्यक्त वाणी) कहते हैं। भाषा के द्योतक हमारे पुराने शब्द वाक् और वाणी हैं जिसमें बोलने का अर्थ निहित है। वाक् का दूसरा अर्थ जिह्वा भी होता है। जिह्वा बोलने में प्रमुख भाग लेती हैं, इसीलिए अन्य भाषाओं में भी जिह्वा और भाषा के लिए समान शब्द है, जैसे - जबान, टंग, लॉग, लिगुआ, स्पीच आदि। मनुष्य के भावों, विचारों और इच्छाओं को प्रकट करने का काम भाषाद्वारा किया जाता है। बाबूराम सक्सेना के अनुसार - ''यदि वैज्ञानिक और सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो भाषा मनुष्य के केवल विचार-विनिमय का ही साधन नहीं है, विचार का भी साधन है।''[2] मनुष्य का चिंतन भाषा में ही संभव है। इसीलिए भाषा और विचार का अटूट संबंध है।

भाषा की परिभाषा :- भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भाषा की अलग-अलग परिभाषाएँ दी गयी है। इन परिभाषाओं को देखने से यह अनुभव होता है, कि भाषा की परिभाषा को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ प्रसिद्ध भाषाविदों की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं -

1. डॉ. श्यामसुंदर दास :- ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।''[3]

2. पतंजली :- ''जिन वर्णों से हम अपनी वाणी को प्रकट करते है, वे व्यक्त वर्ण-समूह ही भाषा कहलाते है।''[4] इन्होंने मनुष्य के वाणी को ही व्यक्त वाक् माना है।

3. डॉ. बाबूराम सक्सेना :- ''जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनकी समष्टि को भाषा कहते है। भाषा के इस लक्षण में विचार के अंतर्गत भाव और इच्छा भी है।''[5]

---

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प, पृ. 169.
2. प्रा. नरसिंगप्रसाद दुबे - हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, पृ. 2.
3. वही, पृ. 2.
4. वही, पृ. 3.
5. वही, पृ. 3.

4. एच. स्वीट - ''ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।''[1]

5. डॉ. भोलानाथ तिवारी :- ''भाषा उच्चारणावयों से उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि प्रतिकों की वह व्यवस्था हैं जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते है।''[2]

6. कामताप्रसाद गुरू :- ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है।''3

7. जेस्परसन :- ''मनुष्य ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा अपना विचार प्रकट करता है। मानव मस्तिष्क वस्तुतः विचारों के प्रकाशन के लिए ऐसे शब्दों का सदैव उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्यकलापों को ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।''[4]

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं को देखने से यह स्पष्ट है कि भाषा में अर्थबोध की क्षमता होनी चाहिए। और अर्थविशेष की प्राप्ति के लिए ध्वनि का प्रयोग मुँह से किया जाता है। भाषा एक सार्थक ध्वनि संकेत होती है। भाषा का प्रयोग यादृच्छिक होता है। भाषा के ध्वनि संकेत रूढ होते है। इससे यह स्पष्ट है कि भाषा में मानवीय व्यक्त वाणी ही प्रमुख होती है और उसी का अध्ययन करना आवश्यक है। भाषा सीखने की शक्ति मनुष्य में स्वाभाविक रूप से होती है। वह अनुकरण से भाषा सीखता है। अनुकरण की अपूर्णता के कारण भाषा में सतत परिवर्तन होता है। इसीलिए भाषा को बहता नीर कहा गया है।

6.1.2 शब्दों के विविध रूप :-

सुदर्शन भाटिया जी समाजवादी साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी गहरी अध्ययनशीलता तथा अनुभूतियों से साहित्य में विभिन्न क्षेत्रों के एवं समाज स्तरों से युक्त शब्दों का मार्मिक प्रयोग किया है। इनके 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में प्रयुक्त तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, अंग्रेजी शब्द, अरबी शब्द, संयुक्त शब्द, शब्द पुनरूक्तियाँ, फारसी शब्द, मुहावरें आदि का समावेश है। इसका विवेचन-विश्लेषण निम्नांकित है -

---

1. प्रा. नरसिंग प्रसाद दुबे - हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, पृ. 3
2. प्रा. नरसिंग प्रसाद दुबे - वही, पृ. 2.
3. वही, पृ. 2
4. वही, पृ. 3

BARR. B. LASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

6.1.2.1 तत्सम शब्द :-

पात्रों की स्थिति तथा परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग ही उपन्यासकार की विशेषता है। भाटिया जी के 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द हैं। भावों की बोधगम्यता और अभिव्यक्ति इनके माध्यम से हुई है। तत्सम शब्द - 'प्रतीक्षा'[1], 'आशीर्वाद'[2], 'जीवन'[3], 'क्रोध'[4], 'धन्यवाद'[5], 'मुहूर्त'[6], 'विवाह'[7], 'जीवन'[8], 'दुःख'[9]।

अतः उक्त शब्द पात्रों के भात्तों को व्यक्त करते हैं। भाटिया जी ने प्रस्तुत उपन्यासों में व्यावहारिक तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है।

6.1.2.2 तद्भव शब्द :-

उपन्यास के कथ्य के अनुरूप भाषागत और स्वाभाविकता लाने के लिए तद्भव शब्दों का प्रयोग आवश्यक होता है। जैसे - 'गाँव'[10], 'घर'[11], 'झोपडी'[12], 'माँ'[13], 'बिटिया'[14], 'हृदय'[15], 'आँख'[16], 'लाल'[17], 'भौंहे'[18], 'मुँह'[19], 'घर'[20], 'आँसू'[21]।

अतः उक्त शब्दों द्वारा विवेच्य उपन्यासों की विषय वस्तु का महत्त्व अधिक ही बढ जाता है। उपन्यासों के कथ्य को रोचक, सरल तथा गतिशील बनाने में सुदर्शन भाटिया जी ने तद्भव शब्दों का मार्मिक चित्रण किया है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्मलो, पृ. 16
2. वही, पृ. 19
3. वही, पृ. 21.
4. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 25.
5. वही, पृ. 27.
6. वही, पृ. 82.
7. वही, पृ. 71.
8. वही, पृ. 90
9. वही, पृ. 57.
10. सुदर्शन भाटिया - कल्मलो, पृ. 10.
11. वही, पृ. 11.
12. वही, पृ. 13.
13. वही, पृ. 16.
14. वही, पृ. 24.
15. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 21.
16. वही, पृ. 17
17. वही, पृ. 9
18. वही, पृ. 10
19. वही, पृ. 18
20. वही, पृ. 39
21. वही, पृ. 74.

6.1.2.3 अंग्रेजी शब्द :-

स्वतंत्रपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर काल से हमारे देश में अंग्रेजी भाषा का कम-अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है। साथ ही साहित्य में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। सुदर्शन भाटिया जी भी इससे अपवाद नहीं हैं। इन्होंने 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। वे इसप्रकार हैं -'ईडियट, बास्टर्ड'[1] 'थैंक्यू, शट अप'[2], 'थैंक्यू अगेन'[3], 'नाईट सूट'[4], 'गुड लक'[5], 'टू भी आलसो गुड लक'[6], 'डिनर'[7], 'स्टैंडर्ड होटल'[8], 'वैरी गुड'[9], 'क्लास रूम'[10], 'मिसिंग'[11], 'सॉरी'[12], 'आई प्रॉमिस'[13], 'स्टडीज'[14], 'डिस्कन्टीन्यू'[15], 'लॉन'[16], 'रिकवैस्ट'[17], 'ब्लैकमेल'[18], 'एफ्टिंग'[19], 'कोका कोला'[20], 'पैप्सी कोला'[21], 'कोल्ड ड्रिंक्स'[22], 'ओ मिस्टर, शट-अप'[23], 'हीरो'[24], 'डोण्ट टच मी'[25], 'डू नाट डिस्टर्ब मी'[26], 'वैरी सिम्पल'[27], 'फ्यूचर ब्राइट'[28], 'प्रोड्यूजरज, डाएरैक्टराज, फाइनेन्सराज'[29], 'आई एम लक्की-वेरी लक्मकी'[30], 'नाट एग्रीड'[31], 'प्रॉमिस'[32], 'विजिटिंग कार्ड'[33], 'ऑटोग्राफ प्लीज'[34], 'फास्ट फूड'[35]।

अत: कहना सही होगा कि, भाटिया जी के विवेच्य उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दों की भरमार दिखाई देती है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 27.
2. वही, पृ. 28
3. वही, पृ. 29
4. वही, पृ. 30
5. वही, पृ. 34
6. वही, पृ. 34
7. वही, पृ. 45
8. वही, पृ. 81
9. वही, पृ. 81
10. वही, पृ. 83
11. वही, पृ. 85
12. वही, पृ. 87
13. वही, पृ. 89
14. वही, पृ. 90
15. वही, पृ. 91
16. वही, पृ. 93
17. वही, पृ. 94
18. वही, पृ. 95
20. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 13
21. वही, पृ.13
22. वही, पृ. 13
23. वही, पृ. 15
24. वही, पृ. 25
25. वही, पृ. 18
26. वही, पृ. 18
27. वही, पृ. 19
28. वही, पृ. 20
29. वही, पृ. 22
30. वही, पृ. 22
31. वही, पृ. 25
32. वही, पृ. 25
33. वही, पृ. 33
34. वही, पृ. 34
35. वही, पृ. 52

6.1.2.4 अरबी शब्द :-

सुदर्शन भाटिया जी के विवेच्य उपन्यासों में अरबी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त शब्दों के उदाहरण इस प्रकार से हैं - 'कफन'[1], 'तशरीफ'[2], 'मजाक'[3], 'तमीज'[4], 'मिजाजु'[5], 'बगावत'[6], 'इतमीनान'[7], 'जिक्र'[8], 'नफरत'[9], 'शुक्रिया'[10], 'मुआफ'[11], 'मजा'[12], 'नज़र'[13], 'तरफा'[14], 'इज्ज़त'[15], 'इन्तजार'[16], 'आज़ाद'17, 'चीज़'[18]।

अत: उक्त शब्दों का प्रचलन दैनिक व्यवहार में किया जाता है। उसे लेखक ने प्रस्तुत किया है।

6.1.2.5 फारसी शब्द :-

विवेच्य उपन्यासों में फारसी शब्दों का प्रयोग भाटिया जी ने इस प्रकार किया है - 'शादी'[19], 'तारीफ'[20], 'मुँह'[21], 'बगावत'[22], 'काफी'[23], 'फीस'[24], 'नजदीक'[25], 'तहेदिल'[26], 'तेज'[27], 'बीमार'[28]।

अत: कहना सही होगा कि सुदर्शन भाटिया जी ने विवेच्य उपन्यासों में अरबी शब्दों के साथ-साथ फारसी शब्दों का प्रयोग बड़ी मात्रा में किया गया है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 42
2. वही, पृ. 40
3. वही, पृ. 24
4. वही, पृ. 30
5. वही, पृ. 35
6. वही, पृ. 58
7. वही, पृ. 14
8. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 16
9. वही, पृ. 19
10. वही, पृ. 21
11. वही, पृ. 22
12. वही, पृ. 26
13. वही, पृ. 29
14. वही, पृ. 31
15. वही, पृ. 32
16. वही, पृ. 34
17. वही, पृ. 42
18. वही, पृ. 50
19. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 10
20. वही, पृ. 16
21. वही, पृ. 35
22. वही, पृ. 58
23. वही, पृ. 64
24. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 34
25. वही, पृ. 38
26. वही, पृ. 40
27. वही, पृ. 54
28. वही, पृ. 73

6.1.2.5 शब्द पुनरूक्तियाँ :-

भाटिया जी के विवेच्य उपन्यासों में शब्द पुनरुक्तियाँ शब्दों का प्रयोग मिलता है। भाषागत सौंदर्य की अभिवृद्धि के लिए प्राय: शब्द, पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - 'कहते-कहते'[1], 'बातों-बातों'[2], 'जोर-जोर'[3], 'कल-कल'[4], 'दूर-दूर'[5], 'पीछे-पीछे'[6], 'हँसी-हँसी'[7], 'भाँति-भाँति'[8], 'अपनी-अपनी'[9], 'बार-बार'[10], 'चुकाते-चुकाते'[11], 'थोडी-थोडी'[12], 'अधूरी-अधूरी'[13], 'निकलते-निकलते'[14], 'चुप-चुप'[15], 'पहुँचते-पहुँचते'[16], 'थोडी-थोडी'[17], 'तडप-तडप'[18], 'कहता-कहता'[19], 'सोचती-सोचती'[20], 'बार-बार'[21], 'ऊँचे-ऊँचे'[22], 'सहमी-सहमी'[23], 'टुकडे-टुकडे'[24], 'पसीना-पसीना'[25], 'धीरे-धीरे'[26], 'लेटे-लेटे'[27], 'भिन्न-भिन्न'[28], 'बिलख-बिलख'[29], 'जल्दी-जल्दी'[30], 'सही-सही'[31], 'चोरी-चोरी'[32], 'पीते-पीते'[33], 'कुछ-कुछ'[34], 'पहल-पहल'[35], 'पडा-पडा'[36]।

अत: कहना सही होगा कि शब्द पुनरुक्ति शब्द भाषा में सौंदर्य को प्रभावशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण होते है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 10
2. वही, पृ. 11
3. वही, पवृ. 12
4. वही, पृ. 13
5. वही, पृ. 13
6. वही, पृ. 16
7. वही, पृ. 19
8. वही, पृ. 20
9. वही, पृ. 28
10. वही, पृ. 36
11. वही, पृ. 37
12. वही, पृ. 45
13. वही, पृ. 46
14. वही, पृ. 48
15. वही, पृ. 59
16. वही, पृ. 60
17. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 12
18. वही, पृ. 13
19. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 16
20. वही, पृ. 17
21. वही, पृ. 19
22. वही, पृ. 22
23. वही, पृ. 23
24. वही, पृ. 36
25. वही, पृ. 37
26. वही, पृ. 38
27. वही, पृ. 39
28. वही, पृ. 41
29. वही, पृ. 45
30. वही, पृ. 49
31. वही, पृ. 59
32. वही, पृ. 62
33. वही, पृ. 77
34. वही, पृ. 78
35. वही, पृ. 87
36. वही, पृ. 88

6.1.2.7 संयुक्त शब्द :-

भाटिया जी के उपन्यास 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में अंग्रेजी शब्द, अरबी तथा तद्भव शब्दों के साथ-साथ संयुक्त शब्द भी दिखाई देते है। भाषा में सरलता तथा सुंदरता लाने के लिए संयुक्त शब्दों का प्रयोग किया गया है। विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त संयुक्त शब्दों के उदाहरण इसप्रकार हैं - 'चलता-फिरता'[1], 'इधर-उधर'[2], 'आस-पास'[3], 'माँ-बाप'[4], 'रोना-धोना'[5], 'खेती-बाडी'[6], 'रंग-बिरंगे'[7], 'अनुनय-विनय'[8], 'ताना-बाना'[9], 'निश्चय-अनिश्चय'[10], 'खाए-पिए'[11], 'जमीन-आसमान'[12], 'अडोस-पडोस'[13], 'भाई-बहन'[14], 'दृष्ठ-पुष्ठ'[15], 'लूटने-खसोटने'[16], 'दुबले-पतले'[17], 'इर्द-गिर्द'[18], 'टूटना-फूटना'[19], 'उठता-चलता'[20], 'ठाठ-बाठ'[21], 'मिर्च-मसाला'[22], 'तडक-भडक'[23], 'देख-रेख'[24], 'अस्त-व्यस्त'[25], 'लेन-देन'[26], 'माता-पिता'[27], 'छोटी-बडी'[28], 'सलाह-मश्वरा'[29]।

अत: कहना अवश्य होगा कि सुदर्शन भाटिया जी के विवेच्य उपन्यासों में संयुक्त शब्दों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 10
2. वही, पृ. 15
3. वही, पृ. 20
4. वही, पृ. 31
5. वही, पृ. 47
6. वही, पृ. 77
7. वही, पृ. 81
8. वही, पृ. 93
9. वही, पृ. 99
10. वही, पृ. 104
11. वही, पृ. 106
12. वही, पृ. 118
13. वही, पृ. 128
14. वही, पृ. 128
15. वही, पृ. 106
16. वही, पृ. 13
17. वही, पृ. 16
18. वही, पृ. 19
19. वही, पृ. 36
20. वही, पृ. 36
21. वही, पृ. 42
22. वही, पृ. 52
23. वही, पृ. 54
24. वही, पृ. 70
25. वही, पृ. 78
26. वही, पृ. 80
27. वही, पृ. 81
28. वही, पृ. 89
29. वही, पृ. 105

6.1.2.8 मुहावरे :-

मुहावरे का प्रयोग रचनाकार की बुद्धि की विशेष पहचान होती है। मुहावरों का प्रयोग भाषा में रोचकता लाने के लिए किया जाता है। इसके प्रयोग से भाषा प्रभावशाली तथा आकर्षक बनती है। सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में इसका प्रयोग हुआ है। जैसे - 'नौ दो ग्यारह होना'[1], ''बिल्लियाँ उछालना'[2], 'फूला न समाना'[3], 'गद्‌गद् होना'[4], 'ऊँगली टेढी करना'[5], 'अंगारे बरसना'[6], 'फूट-फूटकर रोना'[7], 'दाँतों तले ऊँगली दबाना'[8], 'सुखना सुखते रहना'[9], 'साँप सूँघना'[10], 'नाकों चने चबाना'[11], 'आँखों से अंगारे बरसना'[12], 'रौंगटे खडे होना'[13], 'पैरों तले जमीन खिसकना'[14], 'होश उडना'[15], 'आँखों से ओझल होना'[16], 'पसीना-पसीना होना'[17], 'बिलख बिलख कर रोना'[18], 'आँखें तरसना'[19], 'लकीर पीटना'[20], 'न्योछावर करना'[21], 'आँखें फाड-फाडकर देखना'[22], 'पश्चाताप की आग में जलना'[23], 'गुस्से से लाल-पीला होना'[24]।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि भाटिया जी के उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग मिलता है। मुहावरों का यथोचित प्रयोग कर भाटिया जी ने अपनी भाषा सौंदर्य को गरिमा प्रदान की है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 17
2. वही, पृ. 19
3. वही, पृ. 20
4. वही, पृ. 44
5. वही, पृ. 53
6. वही, पृ. 58
7. वही, पृ. 74
8. वही, पृ. 78
9. वही, पृ. 57
10. वही, पृ. 91
11. वही, पृ. 115
12. वही,पृ. 122
13. वही, पृ. 122
14. वही, पृ. 128
15. वही, पृ. 128
16. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ', पृ. 24
17. वही, पृ. 37
18. वही, पृ. 45
19. वही, पृ. 63
20. वही, पृ. 75
21. वही, पृ. 97
22. वही, पृ. 119
23. वही, पृ. 119
24. वही, पृ. 128

6.1.3 आलोच्य उपन्यासों में चित्रित भाषा की विशेषताएँ :-

1. सुदर्शन भाटिया जी के विवेच्य उपन्यासों की भाषा को प्रभावमय बनाने के लिए अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। इसमें प्रमुखत: से तत्सम, तद्भव अँग्रेजी, अरबी और फारसी शब्दों को अपनाया है।
2. विवेच्य उपन्यासों की भाषा को सरल और सुंदर बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया गया है। किंतु कहावतों का प्रयोग न के बराबर मिलता है। इससे थोडे से शब्दों में भाषा को रोचक बनाने में लेखक को सफलता मिली है।
3. सुदर्शन भाटिया स्वयं अभियंता होने के कारण अंग्रेजी शब्द कुछ मात्रा में प्रयोग करते हैं। वह स्वाभाविक भी है।
4. सुदर्शन भाटिया हिमाचल प्रदेश में रहते हैं, अत: उनकी भाषा में पहाडी आँचल की शब्दावली मिलती है।
5. पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग भाटिया जी की विशेषता है।
6. छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग विवेच्य उपन्यासों की विशेषता है। इससे सहजता एवं सरलता आ गयी है।

6.2 शैली :

6.2.1 शैली का स्वरूप :-

शैली का संबंध रचना के साथ-साथ रचनाकार से भी होता है। इसी कारण रचनाकार का अनुभव, शिक्षा, संस्कार, परिवेश तथा रूचि आदि का रचना के निर्माण में विशेष महत्त्व होता है। शैली में रचनाकार का व्यक्तित्व ही समाहित रहता है। सुदर्शन भाटिया जी इससे अपवाद नहीं हैं। इनके 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में विविध शैली के भेद परिलक्षित होते हैं।

सामान्यत: विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की पद्धति को शैली कहा जाता है। अंग्रेजी में उसे 'स्टाईल' (Style) कहा जाता है। शैली के बारे में डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त की मान्यता है, कि "शैली शब्द संस्कृत के शील से व्युत्पन्न है। 'शीलम्' के अनेक अर्थ हैं, यथास्वभाव, लक्षण, झुकाव, उदात्त चरित्र आदि। शैली का आंग्ल पर्याय 'स्टाइल' (Style) है जो कि लॅटिन भाषा के 'स्टाइलॅस' (Stylus) से व्युत्पन्न है। स्टाइलॅस का अर्थ है - लिखने की

नोकदार कलम। आगे चलकर इसके समानार्थक 'स्टाइल' के अनेक अर्थ विकसित हो गए। जिनमें से कुछ ये हैं - लिखने का ढंग, लिखित रचना, लेखक की अभिव्यक्ति या वैशिष्ट्य, साहित्यिक रचना की रूपगत विशेषताएँ, बोलने का लहजा, रीति या प्रथा, किसी कलाकार की रचना-पद्धति की विशिष्टता।''[1]

अत: कहना सही होगा कि शैली शब्द रीति, पद्धति, तरीका, प्रणाली, रिवाज तथा वाक्य रचना का ढंग आदि अर्थों से युक्त होता है।

6.2.2 शैली की परिभाषा :-

शैली आधुनिक युग की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि है। जो प्राचीन वस्तु को नवीन परिवेश में प्रस्तुत कर सकती है। शैली को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है। 'शैली' की परिभाषा इसप्रकार है -

1. डॉ. श्यामसुंदर दास -

डॉ. श्यामसुंदर दास शैली के बारे में कहते हैं - ''किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उनकी ध्वनि आदि का नाम शैली है।''[2]

2. डॉ. गुलाबराय -

डॉ. गुलाबराय जी के अनुसार - ''शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।''[3]

अत: कहना सही होगा कि रचनाकार अपने मन की भावाभिव्यक्ति को किसी विशेष रीति या पद्धति से स्पष्ट करता है, उस रीति या पद्धति को शैली कहा जाता है।

3. डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र -

डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र शैली के बारे में लिखते हैं - ''वास्तव में भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और उस माध्यम के प्रयोग की रीति या विधि शैली है।''[4]

---

1. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश, पृ. 699.
2. डॉ. श्यामसुंदर दास - साहित्य लोचन, पृ. 95.
3. डॉ. गुलाबराय - सिद्धांत और अध्याय, पृ. 180.
4. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृ. 34.

6.2.3 शैली के भेद :-

साहित्यकार अपने विचार तथा भावों को भाषाद्वारा अभिव्यक्त करता है। अभिव्यक्ति में शैलियाँ भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। शैली द्वारा साहित्यकार का व्यक्तित्व और पात्रों की स्वभावगत विशेषताओं का ज्ञान होता है। साहित्यकार कथानक के विस्तार एवं कथा की भाषिक अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग शैलियों का प्रयोग करता है। शैली के भेद/प्रकार इसप्रकार हैं-

1. वर्णनात्मक शैली :-

कथानक को प्रस्तुत करने की वर्णनात्मक शैली उपन्यासों में अधिक प्रचलित है। इस शैली का प्रचलन हिंदी उपन्यासों के प्रारंभिक युग से ही प्राप्त होता है। इसमें उपन्यासकार एक तटस्थ व्यक्ति की भाँति सारी घटनाओं, पात्रों के संबंध में वर्णन करता चलता है। और बीच-बीच में अपने विचार तथा अपनी समीक्षाएँ एवं मान्यताएँ भी प्रकट करता चलता है। इसमें उपन्यासकारों की विवरणात्मक प्रतिभा ही अधिक मुखरित होती है और मनोविज्ञान, दर्शन या उपन्यास की अत्याधुनिक प्रणालियों से नितांत अपरिचित उपन्यासकार के लिए भी यह प्रणाली अत्यंत सहज होती है।"[1]

2. आत्मकथनात्मक शैली :-

"लेखक को अपने पात्रों के संबंध में अधिक-से-अधिक ज्ञात रहता हैं, जबकि पाठक उनके संबंध में बहुत सारी बातों से अनभिज्ञ रहता है। लेखक को इस बात का प्रत्येक संभव प्रयत्न करना चाहिए, जिससे उसकी कथा पूर्ण सत्यता का आभास प्रदान कर सके। इसके लिए उपन्यासकार प्रायः प्रथम पुरुष में ही सारी कथा कहता चलता है। उपन्यास के 'मैं' को साधारणतया सामान्य अर्थों में उपन्यासकार के 'मैं' का प्रतीक समझ लिया जाता है। यह उपन्यासकार को वस्तु संगठन के संबंध में सुविधाजनक होता है। वह अपनी इच्छानुसार जैसा चाहे, वांछित वस्तु संगठन कर सकता है। इस साधारणतया आत्मकथनात्मक शैली कहा जाता है।"[2]

3. पत्रात्मक शैली :-

कथानक को प्रस्तुत करने की एक शैली पत्रात्मक है, जो अपेक्षाकृत नवीन है। इसमें कुछ चुने हुए पत्रों के माध्यम से कथानक का ताना-बाना संगुफित किया जाता है। ये पत्र प्रायः नायक-नायिका के बीच लिखे जाते हैं, पर यह कोई सर्वमान्य नियम नहीं है। यह पत्र-व्यवहार

---

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 56.
2. वही, पृ. 55.

प्रधान पात्रों या गौण पात्रों के मध्य भी हो सकता है। सभी पात्रों के पत्र स्वयं लेखक को ही लिखने पडते हैं, पर वे इस रूप में प्रस्तुत होने चाहिए, जिससे संबंध पात्रों की चित्तवृत्तियों एवं अन्य चारित्रिक विशेषताओं, लेखन शैली, शब्दों के प्रयोग आदि पूर्ण स्वाभाविक प्रतीत हों।[1]

4. डायरी शैली :-

"कथानक को प्रस्तुत करने की एक अभिनव शैली डायरी पद्धति है। इसमें एक या दो पात्रों की डायरी के माध्यम से सारे उपन्यास की रचना की जाती है। इस शैली में प्राय: पात्रों की संख्या कम होती है। मनोविश्लेषणात्मक शैली अपनाने वाले उपन्यासकारों की यह प्रिय शैली है, क्योंकि इसमें उन्हें अपने पात्रों के अंर्तद्वंद्व सुलझाने का स्वतंत्र अवसर प्राप्त होता है। वे एक तटस्थ पर्यवेक्षक की भाँति उनकी भाव ग्रंथियों का विश्लेषण और मानसिक गुत्थियों का समाधान प्रस्तुत करते चलते हैं। इसमें उपन्यासकार स्वयं दूर हट जाता है और सारा उत्तरदायित्व संबंधित पात्रों पर आ पडता है।"[2]

5. चित्रात्मक शैली (Photographic) :-

"कथानक प्रस्तुत करने की एक शैली चित्रात्मक (Photographic) है, जिसमें उपन्यासकार एक फोटोग्राफर का रूप धारण कर लेता है और किसी स्थान-विशेष के रीति-रिवाजों, संस्कृति, सभ्यता, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों, धार्मिक रूढियों, प्रगतिशील तत्वों, नारी और पुरुष की दृढ़ इच्छाओं, उद्देश्यों, संघर्षों , पराजय एवं विजय, अतृप्त इच्छाओं एवं वासनाओं आदि के स्नैप शॉट प्रस्तुत करता चलता है। इस शैली का प्रयोग आँचलिक उपन्यासों में विशेष रूप से होता है।"[3]

6. प्रतीकात्मक शैली :-

'प्रतीक' शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रति+ इक' से हुई है। जिसका अर्थ है कि किसी की ओर झुका हुआ होता है। जब सादृश्य की वजह से कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु को प्रतिपादन करती है, तो उसे प्रतीक कहा जाता है। प्रतीक के बारे में धीरेंद्र वर्मा लिखते हैं - "किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तुद्वारा किसी अन्य स्तर के विषय प्रतिनिधित्व करनेवाली वस्तु प्रतीक है।"[4]

---

1. डॉ. सुरेश सिनहा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 57.
2. वही, पृ. 59.
3. वही, पृ. 60
4. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोष, भाग 1, पृ. 515.

7. प्रश्नोत्तर शैली :-

इस शैली का प्रयोग रचनाकार अपनी रचना में सवाल और जवाब के रूप में करता है।

8. संवाद शैली :-

रचनाकार अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए रचना में संवाद शैली को प्रस्तुत करता है। संवाद शैली के कारण उपन्यास के कथ्य में सजीवता, स्पष्टता, नाट्यात्मकता, एवं रोचकता आ जाती है।

9. मनोवैज्ञानिक शैली :-

इस शैली के भीतर कथानक का सूत्र मूलतः पात्रों की विविध मनस्थितियों के द्वारा निर्देशित होता है। इसके बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं - "इसमें केवल किन्हीं पात्रों के व्यावहारिक और बाह्य कार्य-कलाप का ही उल्लेख नहीं होता, वरन् उनके मूल चालक स्त्रोतों तथा मानसिक पृष्ठभूमि का भी विश्लेषण प्रस्तुत करने की चेष्टा की जाती है।"[1]

10. पूर्व दीप्ति शैली :-

पूर्व दीप्ति शैली को फ्लैश बैक शैपी के नाम से जाना जाता है। इनमें जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति-तरंगों के रूप में किया जाता है। इस बारे में डॉ. टंडन लिखते हैं - "उपन्यासकार कथा कहते-कहते अकस्मात प्रसंग के सूत्र को किसी विगत घटना के सूत्र से जोड देता है, जिससे कथा की गति विकास की ओर अग्रसर होती है।"[2]

11. नाटकीय शैली :-

नाटकों जैसा प्रभाव एवं गति की तीव्रता लाने के लिए उपन्यासकार इस शैली का प्रयोग करते हैं। इस बारे में डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं - "इसमें उपन्यासकार पात्रों को भावात्मक वार्तालाप के साथ-साथ अपनी उपयुक्त टिप्पणियों और पात्रों के अनुभाव चित्रण तथा कहीं-कहीं उनके अधूरे वाक्यों के माध्यम से एक भव्य वातावरण निर्माण करते हुए उनकी आंतरिक भावनाओं की सफल अभिव्यंजना और उद्घाटन करते हैं।"[3]

इस प्रकार शैली के अनेक भेद दिखाई देते है।

---

1. डॉ. प्रताप नारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ. 191.
2. वही, पृ. 198.
3. डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृ. 236.

6.2.4 आलोच्य उपन्यासों में चित्रित शैली :-

वस्तुतः किसी भी औपन्यासिक रचना में किसी एक ही शैली का प्रयोग नहीं होता। कथ्य की माँग के अनुसार उपन्यासकार विविध शैलियों का प्रयोग करता है। समाजवादी रचनाकार सुदर्शन भाटिया जी ने 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में शैली के विविध प्रकारों को प्रस्तुत किया है।

6.2.4.1 वर्णनात्मक शैली :-

इस शैली को व्याख्यात्मक शैली भी कहा जाता है। प्राचीन काल से यह शैली प्रचलित रही है। रचनाकार कथानक को रोचक तथा सुगठित बनाने के लिए विविध घटनाओं का वर्णन करता है। विवेच्य उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। वह निम्नांकित है -

सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने पहाडी पर्वतों का वर्णन किया है - "गाँव से थोडी दूर पर्वतों के आंचल में छोटे-छोटे कई चश्मे कल-कल करते बह रहे थे। चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। दूर-दूर तक ऊँचे-ऊँचे पर्वत दिखाई दे रहे थे। कहीं-कहीं छोटी झोपडियाँ भी थीं। यहाँ के निवासी सादगी में पले अपने आप में ही मस्त थे।"[1]

उसी प्रकार व्यास नदी के पुल का वर्णन भी है - "व्यास नदी का पुल। हैंगिंग ब्रिज। अंग्रेजों ने आज से सौ साल पूर्व इसे डिज़ाइन किया। मन्डी के राजा ने बनवाया। गाडियाँ बहुत छोटी होती थी - बाद में धीरे-धीरे बडी होने लगी। तो भी यह पुल काम आ रहा है। मन्डी नगर से होकर बसें इसी पुल से पठान कोट रोड को जाती हैं। यह अनूठा पूल है। देखने लायक।"[2] उक्त कथनों से वर्णनात्मक शैली परिलक्षित होती है।

भाटिया जी लिखित 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में भी वर्णनात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। प्रस्तुत उपन्यास में भाटिया जी ने लाला माणिकचंद्र का वर्णन बडी मार्मिक दृष्टि से किया है - "लाला माणिकचंद्र का चेहरा गोल, नाक छोटी पर कुछ अधिक मोटी थी। यदि नाक के सबसे ऊँचे भाग को बिंदु मान कर प्रकार से वृत्त लगाया जाय तो पेंसिल का सिक्का चेहरे के अंतिम छोर को छूता हुआ निकल जाएगा। इससे लाला के चेहरे के पूर्ण गोलाकार होने का प्रमाण मिलता

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 13.
2. वही, पृ. 26.

है। मूँछे आयु के प्रमाद से श्वेत होने पर भी श्वेत न रह सकीं। हुक्के के धुएँ से भूरी पड गई।''[1]

उक्त कथन में वर्णनात्मक शैली दिखाई देती है। उसी प्रकार गिरीश जब पुष्पा को मिलने नहीं जाता, तब पुष्पा गिरीश के प्यार में किस तरह बीमार पड जाती है। उसका वर्णन देखिए - ''पुष्पा का चेहरा पीला पड चुका है। अब वह पुष्प न होकर सूखी पँखुडियों सी दिखाई दे रही थी। उसे पहचानना भी कठिन हो गया था। बर्फ की तरह ठण्डी, गिरीश के प्यार में सुलगती हुई। सुलगती बर्फ थी वह।''[2]

अत: कहना सही होगा कि सुदर्शन भाटिया जी ने पुष्पा को वर्णनात्मक शैली के द्वारा चित्रण किया है।

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा कि 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में सुदर्शन जी ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया है।

6.2.4.2 प्रतीकात्मक शैली :-

रचनाकार प्रतीक का प्रयोग रचना में करता है। इस पद्धति को प्रतीकात्मक शैली कहा जाता है। भाटिया जी के उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में मिलता है।

सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। उपन्यास का नायक युवक विधवा औरत के बारे में कहता है - ''विधवा बेचारी पृथ्वी पर मांजरी बिछाए लेटी पडी है। उसके बाल खुले हुए है। कपडे बिलकुल मैले। मुँह भी शायद तीन दिनों से न धोया था। कमरे में एक-दो मिट्टी के बर्तन इधर-उधर लुढ़के पडे थे। एक कोने में एक चारपाई पडी थी। जो बिलकुल टूटी हुई थी। यह सब देख कर रोना आता था।''[3]

उक्त कथन से स्पष्ट होता है, कि सुदर्शन भाटिया जी ने विधवा औरत की दयनीय दशा तथा पीडादायी जीवन को प्रतीकात्मक शैली के द्वारा प्रस्तुत किया है।

सुदर्शन भाटिया जी के 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में प्रतिकात्मक शैली की भरमार अधिक मात्रा में दिखाई देती है। ''रेल की गति तीव्र होती जा रही थी। निरंतर तेज। लगा जैसे उसका कोई पीछा कर रहा है। और लगा नवयौवना सी यह अपने सतीत्व को बचाने के लिए एक

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 67, 68.
2. वही, पृ. 74
3. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 64.

सुहागिन की भाँति, किसी जगह छिप जाना चाहती हो।''[1] उक्त कथन में रेल को 'नववधू' का प्रतीक मानकर उसका वर्णन किया है।

''युवक को दुध-सी श्वेत पैंट और बुशशर्ट पहन रखे थे, जो उसके एकदम गोरे चेहरे के साथ बहुत ही प्रिय लग रहे थे। ये दूध से धूले सफेद वस्त्र युवक के हृदय का प्रतीक हो सकते थे, जिस प्रकार इन वस्त्रों को जरा-सा मैला हाथ लगते ही इसका स्पष्ट निशान दिखाई देने लग जायेगा उसी प्रकार उसके विशाल, स्वच्छ एवं उदार हृदय में क्षणिक परिवर्तन भी अनुभव किया जा सके, जरूरी नहीं।''[2]

उक्त कथन में युवक / गिरीश का वर्णन प्रतीकात्मक शैली में दिखाई देता है।

''सड़क चौडी थी। रंग श्याम। सडक थी बिल्कुल मौन-सी। कहीं-कहीं पर बिजली के जल रहे ग्लोब लगे थे। जिनके कारण सडक के श्याम रंग पर भी कुछ आभा आ गई थी। चमक आ गई थी। यह रूपहली हो उठी थी। ऐसा लगता था मानो किसी अति साँवली युवती ने चमकदार झुमके पहन कर अपने आपको सजाने का भरसक प्रयत्न किया था।''[3]

उक्त कथन में लेखक ने सडक को युवती प्रतीक मानकर उसका चित्रण किया है।

निष्कर्षत: कहना गलत नहीं होगा कि सुदर्शन भाटिया जी के उपन्यासों में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग कम अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

6.2.4.3 प्रश्नोत्तर शैली :-

इस शैली का प्रयोग रचनाकार अपनी रचना में सवाल और जवाब के रूप में करता है। भाटिया जी ने 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में प्रश्नोत्तर शैली का विवेचन किया है।

'कल्लो' उपन्यास में प्रश्नोत्तर शैली के उदाहरण यहाँ परिलक्षित होते हैं। विवेच्य उपन्यास का नायक युवक (परदेसी) जब कल्लो के गाँव का सुधार करके दूसरे गाँव के लिए निकल पडता है। तब रास्ते में उसकी मुलाकात एक साधु महाराज से होती है। तब महाराज युवक से प्रश्न करते हैं -

''तुम्हारा कोई घर नहीं है क्या ?''

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 11.
2. वही, पृ. 12.
3. वही, पृ. 35.

''नहीं महाराज ! मेरा कोई घर नहीं है।''

''क्या काम करते हो?''

''कुछ काम नहीं करता।''

''बिलकुल खाली हो क्या?''

''हाँ, महाराज खाली ही समझिए।''[1]

अतः कहना होगा कि युवक और महाराज के संवादों को भाटिया जी ने प्रश्नोत्तर शैली के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस शैली से कथानक आगे बढ़ता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में भी सुदर्शन भाटिया जी ने प्रश्नोत्तर शैली का मार्मिक चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यास में उपन्यास का नायक गिरीश अपनी प्रेमिका पुष्पा से मिलने के लिए जालन्धर आता है, तब वहाँ उसे उसका बचपन का दोस्त सतीश मिल जाता है और गिरीश को वहाँ दखेकर उससे सवाल करता है कि -

''ये बातें तो बहुत हुई। अब बताओ, कैसे आए थे जालन्धर ?''

''बस, यों ही।''

''नहीं, ऐसा तो नहीं हो सकता ।''

''क्या बता दूँ? सच -सच?''

''पूछ तो रहा हूँ।''

''डाँटोंगे तो नहीं ?''

''बिलकुल नहीं।''[2]

उक्त कथन में प्रश्नोत्तर शैली दिखाई देती है। निष्कर्षतः कहना सही होगा कि, भाटिया जी ने विवेच्य उपन्यासों में प्रश्नोत्तर शैली का मार्मिक रूप में प्रयोग किया है।

6.2.4.4 संवाद शैली :-

रचनाकार अपनी भाषाभिव्यक्ति के लिए रचना में संवाद शैली को प्रस्तुत करता है। संवाद शैली के कारण उपन्यास के कथ्य में नाट्यात्मकता, सजीवता, स्पष्टता एवं रोचकता आ जाती है। पात्रों के संवाद द्वारा उपन्यासकार का व्यक्तित्व भी स्पष्ट होता है। भाटिया जी ने

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 107.
2. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 93.

'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों में संवाद योजना का काफी मात्रा में प्रयोग किया है।

'कल्लो' उपन्यास में संवादों की भरमार अधिक मात्रा में परिलक्षित होती है। विवेच्य उपन्यास में 'कली' युवक से प्रेम करती है, इसलिए युवक जब शहर जाता है, तब उसे आने में बहुत देर हो जाती है, कली युवक के लिए चिंतित दिखाई देती है। तब उसके बाबा उससे पूछते हैं -

"क्या बात है, बडी बेचैन नजर आ रही हो।"

"नहीं, तो !"

"कहीं कुछ खो तो नहीं गया?"

"नहीं बाबा!"

"फिर ?"

"कुछ खों न जाए बाबा, यही डर है।"

"फिर भी?"[1]

उक्त कथन से संवाद शैली का प्रयोग मिलता है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास में भी संवाद शैली की भरमार बड़ी मात्रा में दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में गिरीश और सुमन जब पहली बार मिलते हैं, तब दोनों के भी मन में एक-दूसरे के प्रति भाई-बहन की भावना जागृत होती है। वे दोनों एक-दूसरे से मिलकर बहुत खुश हो जाते है। सुमन को लगता है कि गिरीश को कोई छोटी बहन या भाई होगा, तब गिरीश सुमन से कहता है -

"वह बहुत दूर रहती है क्या ?"

"दूर रहती थी। इस घडी तो वह मेरे निकटतम ही हैं।"

"कहाँ?"

"इसी मकान में। वह है मेरी प्यारी प्यारी बहिना -सुमन।"

"भैया।"

"बहिना ! मैं तुम्हें मिलता रहूँगा।"[2]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ.68.
2. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 50.

अतः कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य उपन्यासों में भाटिया जी ने संवाद शैली का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि सुदर्शन भाटिया जी का भाषा पर असाधारण अधिकार है। इन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जनभाषा का प्रयोग किया है।

भाषाशैली की दृष्टि से सुदर्शन भाटिया जी ने रोचक, प्रभावपूर्ण एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी भाषा को और अधिक अच्छा बनाने के लिए उदारतापूर्वक विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं। इसमें अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग परिलक्षित होता है। इन्होंने विवेच्य उपन्यासों में जनसाधारण की बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग किया है।

इसके साथ ही साथ लेखक सुदर्शन भाटिया जी ने अपने 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में विविध शैलियों के रूप भी दिखाई देते हैं। वे इसप्रकार है - प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक तथा संवादशैली आदि शैलियों के रूप मिलते हैं।

अतः कहना सही होगा कि सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' तथा 'सुलगती बर्फ' उपन्यासों की भाषा शैली सफल एवं प्रभावी मानी जा सकती है।

विवेच्य उपन्यासों में वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक, प्रश्नोत्तरी, संवाद शैली का सुंदर ढंग से प्रयोग किया है। कहीं कहीं नाटकीय शैली का प्रयोग अपवादात्मक स्थिति में पाया जाता है। पत्रात्मक, डायरी शैली एवं आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग विवेच्य उपन्यासों में नहीं मिलता। अतः निष्कर्षतः कह सकते हैं कि सुदर्शन भाटिया की भाषा में सुगमता एवं स्पष्टता के गुण प्राप्त होते है। पाठक को कथारस प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं आती।

-----x-----